अध्याय - 12

मुहावरे और कहावतें

मुहावरे पदबंध होते हैं । ये अभिधामूलक अर्थ प्रकट न करके लाक्षणिक अर्थ प्रकट करते हैं । अपने कथन को सटीक और सशक्त बनाने के लिए भाषा में इनका बड़ी मात्रा में प्रयोग होता है । इनसे भाषा में सौंदर्य बढ़ जाता है ।

कहावतों को लोग परंपरा से कहते-सुनते आते हैं । कहावत के पीछे कोई कहानी होती है । इसमे अनुभूति की राशि संचित रहती है । उदाहरण के द्वारा किसी को सजग करने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है । इनसे कथन असरदार बन जाता है ।

यहाँ कुछ मुहावरों और कहावतों के उदाहरण दिये जा रहे हैं ।

मुहावरे

मुहावरे	अर्थ	प्रयोग
अंधे की लकड़ी	एक मात्र सहारा	बुढ़िया के लिए उसका बेटा अंधे की लकड़ी है ।
आँखों में धूल झोंकना	धोखा देना	तुम मेरी आँखों में धूल नहीं झोंक सकते ।
आकाश पाताल का अंतर	बहुत बड़ा अंतर	उसकी कथनी और करनी में आकाश-पाताल का अंतर है ।
आग बबूला होना	बहुत क्रोध करना	पिताजी किसी का दोष देखते ही आग बबूला हो जाते हैं ।
ईद का चाँद होना	बहुत दिन के बाद दिखाई पड़ना	शादी के बाद तुम तो ईद के चाँद बन गए हो ।

कलेजे पर साँप लोटना	ईर्ष्या से जलना	किसी की उन्नति देखकर तुम्हारे कलेजे पर क्यों साँप लोटता है ?
कानों पर जूँ तक न रेंगना	अनसुनी करना	मैंने उसे पढ़ने के लिए बहुत समझाया, पर उसके कानों पर जूँ तक न रेंगी ।
खरी-खोटी सुनाना सुनाओ।	भला-बुरा कहना	तुम किसी को खरी-खोटी मत
खाक में मिलाना	बर्बाद करना	कुपुत्र वंश-मर्यादा को खाक में मिला देता है ।
गुड़ गोबर करना	काम बिगाड़ना	तुमने सारा काम गुड़ गोबर कर दिया ।
गोबर गणेश	मूर्ख	वह तो गोबर गणेश है , उसे क्या समझाओगे ?
घाव पर नमक छिड़कना	दु:खी को और अधिक दु:ख देना	उसकी नौकरी चली गई, इतने में साहूकार ने रुपये माँगकर घाव पर नमक छिड़क दिया ।
छाती पर पत्थर रखना	बहुत बड़ी हानि होने पर दिल को कड़ा करना	बेटा मर गया तो माँ को छाती पर पत्थर रख कर सब कुछ सहना पड़ा ।
टेढ़ी खीर	कठिन काम	मेरे लिए रस्सी पर चलना टेढ़ी खीर है ।
डींग मारना	बढ़ बढ़कर बातें करना	डींग मत मारो । मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ ।

दाँतों तले अंगुली दबाना	आश्चर्य-चकित रह जाना	जादूगर का जादू देखकर मैं दाँतों तले उँगली दबाकर रह गया ।
दुम दबा कर भागना	डरकर भाग जाना	पुलिस को देखते ही चोर दुम दबाकर भाग गया ।
नाक कटना	बदनामी होना	ऐसा कुछ न करो, जिससे परिवार की नाक कट जाए ।
पानी-पानी होना	लज्जित होना	बेटे ने चोरी की तो पिताजी पानी-पानी हो गए ।
फूला न समाना	अत्यधिक प्रसन्न होना	बच्चे खिलौने देखकर फूले न समाए ।
बीड़ा उठाना	जिम्मेदारी लेना	मैं इस काम का बीड़ा उठाता हूँ ।
लकीर का फकीर होना	पुरानी प्रथा पर चलना	जो लकीर के फकीर होते हैं, वे नई बात स्वीकार नहीं करते ।
लोहा मानना	अधीनता स्वीकार करना	महाराणा प्रताप ने अकबर का लोहा नहीं माना ।
श्री गणेश करना	आरंभ करना	मैं आज इस काम का श्रीगणेश करूँगा ।
हाथ धो बैठना	खो देना	ईमानदारी से काम करो, नहीं तो नौकरी से हाथ धो बैठोगे ।

कहावतें

अँधा क्या चाहे, दो आँखें	– मनचाही वस्तु का बिना प्रयत्न से मिलना
अँधों में काना राजा	– गुणहीन लोगों में अल्प गुणवाले का आदर होना ।
अधजल गगरी छलकत जाय	– ओछा आदमी बहुत इतराता है ।
अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत	– अवसर बीत जाने पर अफसोस करना व्यर्थ है ।
अपनी गली में कुत्ता भी शेर	– अपने क्षेत्र में निर्बल भी शक्ति-प्रदर्शन करता है ।
आगे कुआँ, पीछे खाई	– दोनों ओर विपत्ति ।
उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे	– अपना दोष स्वीकार न करके पूछनेवाले को दोषी ठहराना ।
ऊँची दुकान, फीका पकवान	– केवल बाहरी दिखावा ।
एक पंथ दो काज	– एक ही साधन से दो-दो काम होना ।
काला अक्षर भैंस बराबर	– अनपढ़ आदमी
चोर-चोर मौसेरे भाई	– एक प्रकार के स्वभाववाले जल्दी ही मिल जाते हैं ।
जल में रहकर मगर से वैर	– किसी के अधीन रहकर दूश्मनी नहीं करनी चाहिए ।

जिसकी लाठी उसकी भैंस	– ताकतवर की ही विजय होती है ।
डूबते को तिनके का सहारा	– असहाय को थोडा-सा सहारा भी बहुत होता है ।
दूर के ढोल सुहावने	– दूर की वस्तु अच्छी लगती है ।
धोबी का कुत्ता न घरका न घाट का	– कहीं का न रहना, सभी में असफल
नाच न जाने, आँगन टेढ़ा	– काम में खुद अयोग्य, पर दूसरे पर दोष लगाना ।
पर उपदेश कुशल बहुतेरे	– दूसरों को उपदेश देना आसान है ।
बंदर क्या जाने, अदरख का स्वाद	– अयोग्य व्यक्ति अच्छी वस्तु का महत्व समझ नहीं सकता ।
बिल्ली के भागों छींका टूटा	– संयोग से पारिस्थिति अनुकूल होना ।
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत	– मन की दृढ़ता या दुर्बलता पर सब कुछ निर्भर है ।
मुँह में राम बगल में छुरी	– दिखाने के लिए मित्रता, पर वास्तव में शत्रुता ।
लातों के भूत बातों से नहीं मानते	– नीच लोग डरने से ही काम करते हैं ।
हाथ कंगन को आरसी क्या	– प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं है ।
होनहार बिरवान के होत चिकने पात	– महान बनने के लक्षण बचपन से ही प्रकट होने लगते हैं ।

◆ ❖ ◆